अध्याय–4 विचारक, विश्वास, इमारतें
अंक भार – 7

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. साँची के स्तूप का पता लगाने वाले विद्वान का नाम बताइए।

(a) अलेक्जेंडर कनिंघम (b) जॉन मार्शल (a)

(c) मार्टिगर व्हीलर (d) दयाराम साहनी

2. साँची का स्तूप स्थित है–

(a) उत्तर प्रदेश (b) मध्यप्रदेश (b)

(c) गुजरात (d) राजस्थान

3. भोपाल की शासिका शाहजहाँ बेगम व सुल्तानजहाँ बेगम का संबंध किस इमारत के संरक्षण कार्य से रहा है?
(a) दिल्ली का लाल किला (b) आगरा का ताजमहल (c)
(c) भोपाल का साँची का स्तूप (d) देवगढ़ का दशावतार मन्दिर

4. ऋग्वेद का संकलन काल माना जाता है–
(a) 1500– 500ई0पू0 (b) 1500 – 1000 ई0 पू0 (b)
(c) 1500–500 ई0पू0 (d) 1000–600 ई0 पू0

5. बौद्धधर्म के बौद्ध मठों में रहने वाले लोगों के लिए नियमों का संग्रह मिलता है?
(a) विनय पिटक (b) अभिधम्म पिटक (a)
(c) सुत्त पिटक (d) दीपवंश

6. किस पिटक में मगध के राजा अजातसत्रु और बुद्ध के बीच बातचीत का वर्णन मिलता है–
(a) विनय पिटक (b) सुत्त पिटक (b)
(c) अभिधम्म पिटक (d) थेरीगाथा

7. जैन परम्परा के अनुसार महावीर से पहले 23 शिक्षक हो चुके थे, उन्हें कहा जाता था?
(a) तीर्थंकर (b) श्रमण (a)
(c) साधु (d) उपदेशक

8. ''कहानी जिसमें कमालावती नामक एक महारानी अपने पति को सन्यास लेने के लिए समझा रही है'' की जानकारी मिलती है–
(a) दीपवंश ग्रन्थ से (b) महावंश ग्रन्थ से (d)
(c) थेरीगामा ग्रन्थ से (d) उत्तराहययन सूत्र ग्रन्थ से

9. गुंटूर जिला, आंध्र प्रदेश का वह स्थल जहाँ स्थित एक मूर्ति में बुद्ध के महल से जाते हुए दिखाया गया है?
(a) भरहूत (b) साँची (c)
(c) अमरावती (d) लुम्बिनी

10. सुत्त पिटक में बुद्ध किस अमीर गृहपति को नौकरों व कर्मचारियों की देखभाल के संबंध में सलाह देते हैं?
(a) सिगल (b) जमालि (a)
(c) आनंद (d) उपाली

11. बुद्ध ने अपने प्रिय शिष्य आनंद के समझाने पर महिलाओं को संघ में प्रवेश की अनुमति दी। संघ में प्रवेश पाने वाली पहली महिला कौन थी–
(a) महाप्रजापति गोतमी (b) तारा (a)
(c) सुभद्रा (d) सुकर्णी

12. निम्न में से असंगत है –
(a) बुद्ध का ज्ञान प्राप्ति स्थल – बोधगया (d)
(b) बुद्ध का जन्म स्थान – लुम्बिनी
(c) बुद्ध द्वारा प्रथम उपदेश – सारनाथ
(d) बुद्ध का निब्बान प्राप्ति स्थल – लुम्बिनी

13. शालभजिका व गजलक्ष्मी की की मूर्ति किस स्तूप के तोरण द्वार पर उत्कीर्ण है?
(a) साँची (b) अमरवती (a)

(c) पेशावर (d) नागार्जुनीकोण्डा

14. ''विष्णु का वराह अवतार जिसमें उन्हें पृथ्वी देवी को बचाते हुए दिखाया गया है।'' संबंधित है.

(a) साँची, मध्यप्रदेश (b) अमरावती, आंध्रप्रदेश (c)

(c) एहोल, कर्नाटक (d) महाबलीपुरम्, तमिलनाडु

15. 'बराबर की गुफाएँ स्थित है–

(a) बिहार (b) गुजरात (a)

(c) महाराष्ट्र (d) कर्नाटक

16. "कैलाशनाथ मन्दिर, जिसका सारा ढांचा एक चट्टान को काटकर तैयार किया गया है।" स्थित है?

(a) एलोरा, महाराष्ट्र (b) एहोल, कर्नाटक (a)

(c) अजंता, महाराष्ट्र (d) सांची, मध्यप्रदेश

17. ''गंगा नदी के स्वर्ग से अवतरण का चित्र'' या ''अर्जुन की तपस्या का चित्र'' किस स्थल की एक विशाल चट्टान पर मूर्तियों के रूप में उत्कीर्ण है?

(a) अमरावती, आंध्रप्रदेश (b) देवगढ़, उत्तरप्रदेश (c)

(c) महाबलीपुरम, तमिलनाडु (d) एहोल, कर्नाटक

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

1. समकालीन बौद्ध ग्रन्थों में .....सम्प्रदायों या चिंतन परम्पराओं का उल्लेख मिलता है।

उत्तर– 64

2. त्रिपिटक (तीन टोकरियों) का संग्रह ..... बिहार में बुलाई गई सभा में किया गया था, ये बौद्ध धर्म के ग्रन्थ है।

उत्तर– वेसली/वैशाली

3. दीपवंश व महावंश में .....का बौद्ध इतिहास मिलता है।

उत्तर– श्रीलंका

4. जब बौद्ध धर्म पूर्व एशिया में फैला तब ..... और ..... जैसे तीर्थ यात्री बौद्ध ग्रन्थों की खोज में चीन से भारत आए।

उत्तर–फा–शिएन, श्वैन त्सांग

5. आजीविक ..... व लोकायत .....कहलाते हैं।

उत्तर– नियतिवादी, भौतिकतावादी

6. .....से प्राप्त तीर्थकर की मूर्ति लगभग तीसरी शताब्दी ई. की है–

उत्तर– मथुरा

7. ..... उस युग के सबसे प्रभावशाली शिक्षकों में से एक थे।

उत्तर– बुद्ध

8. बुद्ध के बचपन का नाम ..... था। वह ..... कबीले के सरदार के बेटे थे।

उत्तर– सिद्धार्थ, शाक्य

9. ..... किसी संत या धार्मिक नेता की जीवनी है।

उत्तर– संतचरित्र

10. ..... ऐसी महिलाएँ जिन्होंने निर्वाण प्राप्त कर लिया हो।

उत्तर– थेरी

11. ..... में भिक्खुनियों द्वारा रचित छंदों का संकलन मिलता है, यह सुत्त पिटक का हिस्सा है।

उत्तर– थेरीगाथा

12. बुद्ध के समय से लगभग दो सौ वर्षों बाद असोक ने ..... की अपनी यात्रा की याद में एक स्तंभ बनवाया।

उत्तर – लुम्बिनी

13. महापरि निब्बान सुत्त ..... का हिस्सा है।

उत्तर– सुत्त पिटक

14. शेषनाग पर आराम करते विष्णु की मूर्ति ..... मिलती है।

उत्तर– देवगढ़

15. इतिहासकार ..... ने साँची को वृक्ष और सर्प पूजा का केन्द्र माना था।

उत्तर – जेम्स फर्गुसन

निबंधात्मक प्रश्न–

1. बौद्ध इमारतीय संरचना स्तूप के अंगों का उल्लेख करते हुए साँची के स्तूप की लोककला पर प्रकाश डालिए।

उत्तर– बुद्ध से जुड़े कुछ अवशेष जैसे उनकी अस्थियाँ या उनके द्वारा प्रयुक्त सामान जिन टिलों पर गाड़कर उन पर इमारतनूमा संरचना बना दी जाती थी, वे 'स्तुप' कहलाते थे। जैसे–साँची, अमरावती, पेशावर ।

स्तूप की संरचना/स्तूप के अंग –

(i) अंड – गोलार्थ लिया हुआ मिट्टी का टीला।

(ii) हर्मिका – अंड के ऊपर बना छज्जे जैसा ढाँचा, जो देवताओं के घर का प्रतीक होता है।

(iii) यष्टि – हर्मिका से निकाला मस्तूल जिस पर छत्री लगी होती है।

(iv) वेदिका –टीले के चारों ओर की दीवार ।

(v) तोरणद्वार – स्तूप का अलंकृत प्रवेशद्वार।

साँची के स्तूप की लोक कला –

(i) प्रवेशद्वार पर उत्तीर्ण ''शालभंजिका'' की मूर्तियाँ।

(ii) जानवरों की अलंकृत मूर्तियाँ।

(iii) हाथियों व कमल दल के बीच स्थित महिला की मूर्ति, जिसे इतिहासकार सौभाग्य की देवी गजलक्ष्मी की मूर्ति अथवा बुद्ध की माँ मायादेवी– की मूर्ति मानते हैं।

(iv) स्तम्भों पर उत्कीर्ण सर्पों के चित्र जिन्हें देखकर इतिहासकार जेम्स फर्गुसन ने साँची को वृक्ष और सर्प पूजा का केन्द्र माना था।

उपर्युक्त लोक कला को आधार बनाते हुए 1989 ई० में यूनेस्को ने साँची को विश्व घरोहर स्थल घोषित किया।

2. महायान बौद्ध मत के विकास का उल्लेख करते हुए हीनयान व महायान परम्पराओं में अन्तर स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर– ईसा की प्रथम सदी के आस–पास महात्मा बुद्ध द्वारा स्थापित बौद्ध अवधारणाओं में व व्यवहारों में अन्तर प्रकट होने लग गये। इन अन्तरो के परिणामस्वरूप बोधिसत की अवधारणा उभर करके सामने आने लगी।

बोधिसतों को परम करुणामय जीव माना गया जो अपने सत्कार्यों से पुण्य कमाते थे। लेकिन वे इस पुण्य का प्रयोग दुनिया को दुखों में छोड़ देने व स्वयं के निब्बान प्राप्ति के लिए नहीं करते थे बल्कि वे इससे दूसरों की सहायता कर उनके निष्बान में सहायक बनते थे। अतः इस प्रकार बौद्ध मत में लोक कल्याण पर आधारित महायान परम्परा का विकास हुआ।

हीनयान परम्परा व महायान परम्परा में अन्तर–

क्र.स.	**हीनयान परम्परा**	**महायान परम्परा**
1.	पुरानी बौद्ध परम्परा ।	1.नवीन बौद्ध परम्परा ।
2.	निष्बान की प्राप्ति व्यक्तिगत प्रयास से संभव ।	2. निब्बान की प्राप्ति बोधिसत्त माध्यम से।
3.	बुद्ध को एक मनुष्य के रूप में स्वीकार करने वाली परम्परा।	3. बुद्ध को एक देवता का दर्जा प्रदान किया।
4.	मूर्तिपूजा का निषेध ।	4. बुद्ध व बोधिसत्तों की मूर्तियों की पूजा।

इस प्रकार बौद्ध धर्म की हीनयान परम्परा में रुढ़ीवादी स्वरूप, वहीं महायान परम्परा में कल्याणकारी स्वरूप देखने को मिलता है

3. पौराणिक हिन्दू धर्म के उदय का उल्लेख करते हुए मन्दिर परम्परा के विकास के माध्यम से इसके स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

उत्तर– मुक्तिदाता की कल्पना के रूप में वैष्णव व शैव परम्पराओं के रूप में हमें पौराणिक हिन्दू धर्म के दर्शन होते हैं। जिसमें एक विशेष देवता की पूजा की खास महत्त्व दिया जाता था। इसमें भक्ति के रूप में उपासना पद्धत्ति में उपासक व ईश्वर के बीच का रिश्ता प्रेम व समर्पण का माना जाता था। अवतारवाद के सिद्धान्त ने हिन्दू धर्म की वर्तमान स्वरूप प्रदान किया। अवतार से संबंधित मूर्तियों के अंकन का मूल पुराणों में देखने को मिलता है।

<u>मन्दिर परम्परा का विकास–</u> देव मूर्तियों को रखने के लिए बनाये गये प्रारम्भिक मन्दिर चौकोर कमरे (गर्भगृह) के रूप में होते थे। धीरे–धीरे गृर्भगृह का ढाँचा ऊपर उठा कर के उन्हें शिखर का रूप दिया जाने लगा। जैसे– देवगढ़, उत्तर प्रदेश का पाँचवी सदी का मन्दिर। कुछ मन्दिर पहाड़ी गुफाओं को काटकर बनाये गये। जैसे–एक ही पहाड़ी चट्टान को काटकर बनाया गया एलोरा, महाराष्ट्र का कैलाशनाथ (शिव का एक नाम) मंदिर।

आगे चलकर ये मन्दिर ही मूर्तिकला के प्रमुख केन्द्र बन गये। जिसका दिलचस्प उदाहरण महाबलीपुरम (तमिलनाडु) में एक विशाल चट्टन पर उत्कीर्ण 'गंगा अवतरण'/ अर्जुन की तपस्या' की मूर्तियों के रूप में देखने को मिलता है।